Central Sanskrit University

Shri Raghunath kirti Campus

Devprayag -249301

I.C.P.R. Sponsored Lecture Series, *National Seminar* & *Poets Meet*

(Virtual & Physical Both mode) with Paper Presentation on

" Nationalism in Indian Philosophy , literature and History"

(भारतीयदर्शने, साहित्ये इतिहासे च राष्ट्रवाद:)

On the occasion of the

AMRIT MAHOTSAV

March 22 – 23, 2023

REPORT

Lecture No.	Topic	Date	Time	Name of Guests/ Resource persons

Inaugural Function – Offline Mode

22.03.2023 11.00 AM to 1.00 PM

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर देवप्रयाग में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के सहयोग से भारतीय दर्शन साहित्य एवं इतिहास में राष्ट्रवाद विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, व्याख्यानमाला एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के पहले दिन दिनांक 22.03.2023 के सभी सत्र ऑफलाइन माध्यम से आयोजित किए गए।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में संयोजक न्याय विभाग के सहाचार्य डॉ0 सच्चिदानन्द स्नेही ने सभी का स्वागत कर विषय प्रस्तावना प्रस्तुत की । सत्र में छात्रों द्वारा वैदिक मंगलाचरण एवं स्वागत गान किया गया। सत्र के मुख्य अतिथि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली के संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन केन्द्र के प्रोफेसर हरेराम

Central Sanskrit University

Shri Raghunath kirti Campus

Devprayag -249301

मिश्र संस्कृत साहित्य एवं इतिहास में राष्ट्रवाद तथा विशिष्ट अतिथि आर्यभट्ट महाविद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रोफेसर देव प्रकाश मिश्र ने हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद विषय पर विशिष्ट व्याख्यान दिया। उद्घाटन सत्र का संचालन न्याय विभाग के सहायकाचार्य डॉ0 जर्नादन सुबेदी ने किया। प्रोफेसर हरिराम मिश्र ने बताया कि राष्ट्रवाद की परंपरा भारत में वैदिक काल से ही विद्यमान रही है। वेदों में पृथ्वी सूक्त, अथर्ववेद में अनेक स्थल है, जहां पर राष्ट्र देवता की आराधना की गई है। भारत अखंड भूमि भारत में एक से बढ़कर एक देशभक्त क्रांतिकारी, सैनिक और नागरिक हुए हैं जिन्होंने देश की उन्नति में अपना तन मन धन जीवन सब कुछ समर्पण किया है।

अत: मैं आह्वान करता हूँ राष्ट्र के युवाओं से कि वे देश की उन्नति के लिए अपना 100% योगदान दें। आजादी का अमृत काल चल रहा है । अमृत काल में हमें भारत को विश्व गुरु और एक विकसित राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ाने के मार्ग का निर्माण करना है। जिस देश के युवा राष्ट्र का निर्माण करने के लिए खड़े हो जाते हैं, उस देश को विकसित और विश्वगुरु बनने से कोई नहीं रोक सकता है। प्रोफेसर देव प्रकाश मिश्र ने हिंदी साहित्य में राष्ट्रवाद विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि हिंदी वाङ्मय राष्ट्रवाद की कविताओं से भरा पड़ा है । इन कविताओं ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में और देश के विकास में युवाओं को प्रेरित करने के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

तदनंतर दिनांक 22.03.2023 मध्यान्ह में 2:30 से 5:00 बजे तक तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया।

Central Sanskrit University

Shri Raghunath kirti Campus

Devprayag -249301

Technical Session-I (Paper Presentation & Poets Meet Offline)

(22.03.2023 = 2.30 PM to 5.00 PM)

ऑफलाइन माध्यम से 11 प्रतिभागियों ने संस्कृत साहित्य, दर्शन, हिंदीसाहित्य, इतिहास विषय में राष्ट्रवाद की अवधारणा को लेकर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। दिनांक 23 मार्च 2031 को ऑनलाइन माध्यम से पत्र प्रस्तुतीकरण कविता पाठ एवं व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया ।

Central Sanskrit University

Shri Raghunath kirti Campus

Devprayag -249301

Technical Session-II Paper Presentation & Lecture Series
(23.03.2023 = 10.00 AM to 11.30 AM)- Online Mode

5.	Through Zoom App	23.03.2023 10.00 AM to 11.30 AM		**Session Convenor** Dr. Ankur Vats Assistant Professor Department of Veda CSU Shri Raghunath Kirti Campus Devprayag
6.	*Nationalism in Sanskrit literature* *(संस्कृत साहित्य में राष्ट्रवाद)*	10.15 to 10.45 AM		Prof. Shiv Shankar Mishra H.O.D Depart. Of R&P Shri Lal Bhahadur Shastri National Sanskrit University New Delhi
7.	*Nationalism in Indian Philosophy* *भारतीय दर्शन में राष्ट्रवाद की अवधारणा*	10.45 to 11.35 AM		Prof. S.R. Bhat Former Chairman Indian Council of Philosophical Research, New Delhi

दिनांक 23.03.2023 को प्रात: 10.00 से 11.300 तक ऑनलाइन माध्यम से देश के विख्यात विश्वविद्यालयों के आचार्यों ने विशिष्ट व्याख्यान दिए और काव्य पाठ भी किया जिसमें कुल 17 शोध पत्रों का वाचन किया गया।

संगोष्ठी में लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली के शोध प्रकाशन विभाग अध्यक्ष शिव शंकर मिश्र जी ने संस्कृत साहित्य में राष्ट्रवाद (**Nationalism in Sanskrit literature**), भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर एस आर भट्ट भारतीय दर्शन में राष्ट्रवाद (**Nationalism in Indian Philosophy**) तथा अपने भी अपने विचार व्यक्त किए और युवाओं को राष्ट्रवाद की भावना से प्रेरित होकर कार्य करने का संदेश प्रसारित किया।

Central Sanskrit University

Shri Raghunath kirti Campus

Devprayag -249301

आप सभी ने बताया कि संस्कृत का ऐसा कोई साहित्य नहीं जिसमें राष्ट्रवाद की भावना ना हो। अतः भारत का विकास करना है और भारत को सुविकसित राष्ट्र बनाना है तो हमें भारत के संस्कृत और संस्कृति को प्रोत्साहन देना होगा। वैदिक संस्कृति ही भारत की मूलभूत संस्कृति है जोकि राष्ट्रवाद के तत्वों से ओतप्रोत है।

8 . Technical Session-III =Paper Presentation & Poets Meet in Online Mode

(23.03.2023 = 11.30 AM to 1.00 PM)

Special Lecture – Nationalism in Indian History

(भारतीय इतिहास में राष्ट्रवाद)

Kumar Gunjan Agarwal
Historian and Senior Journalist
Researcher, Mahamana Malviya Mission, New Delhi

(Dr.Manish Sharma)	**(Dr. Amand Mishra)**	**(Dr. Arvind Singh Gour)**	**(Dr. Avadesh Bijlwan)**
Session convenor	Session Co-convenor	Session President	Session Vice President

सत्र के विशिष्ट वक्ता कुमार गुंजन अग्रवाल ने भारतीय इतिहास में राष्ट्रवाद विषय पर विशिष्ट व्याख्यान दिया। इतिहास विभाग के सहायक आचार्य डॉ0 अरविन्द सिंह गौड ने सत्र की अध्यक्षता की तथा सत्र का संचालन व्याकरण विभाग के सहायक आचार्य डॉ. मनीष शर्मा ने किया। प्रतिभागियों ने कविता पाठ भी किया।

9. Technical Session-IV = Paper Presentation & Poets Meet in Online Mode

(23.03.2023 = 2.00 PM to 4.00 PM)

Special Lecture – Nationalism in Indian knowledge Tradition

(भारतीयज्ञानपरम्परा में राष्ट्रवाद)

Prof. Banmali Biswal
Dean Academic Affairs student welfare
Central Sanskrit University, New Delhi

(Anil Kumar)	**(Dr. Manisha Arya)**	**Dr. Shailendra Prasad Uniyal**	**(Dr. Susheel Prasad)**
Session President	Session Co-convenor	Session convenor	Session Vice President

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली के शैक्षणिक संकाय प्रमुख प्रोफेसर बनवालीविश्वाल ने भारतीयज्ञानपरम्परा में राष्ट्रवाद (**Nationalism in Indian knowledge system**) विषय पर विशिष्ट व्याख्यान दिया। सत्र की अध्यक्षता साहित्य विभाग के सहायकाचार्य डॉ0 अनिल कुमार ने तथा संचालन वेद विभाग के सहायकाचार्य डॉ0 शैलेन्द्र प्रसाद उनियाल ने किया।

Central Sanskrit University

Shri Raghunath kirti Campus

Devprayag -249301

Valedictory Function –Offline Mode

(23.03.2023, 04.30 PM to 5.30 PM)

समापन सत्र में परमार्थ निकेतन ऋषिकेश के आचार्य डॉक्टर संदीप भट्ट ने वैदिक साहित्य में राष्ट्र की अवधारणा विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सिद्ध किया कि वैदिक वाङ्मय में सर्वत्र राष्ट्रवाद से संबंधित विचार भरे पड़े हैं । जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है इसीलिए हमें देश के विकास के लिए कार्य करना चाहिए। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। राष्ट्रीय संगोष्ठी कवि सम्मेलन एवं व्याख्यानमाला में परिसर के सभी सभी छात्रों अध्यापकों एवं प्रतिभागियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। सम्पूर्ति सत्र का संचालन वेद विभाग के सहायकाचार्य अंकुर वत्स ने किया । सत्र में धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 मनीष शर्मा ने किया।

कुछ प्रतिभागियों ने कविता पाठ भी किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर देवप्रयाग के निदेशक पीवीबी सुब्रमण्यम महोदय ने की तथा संयोजक डॉ सच्चिदानंद जी ने कार्यक्रम की प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के अंत में संयोजक डॉ. सच्चिदानंद स्नेही ने संगोष्ठी व्याख्यानमाला एवं कवि सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए परिसर के प्राध्यापकों कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

देवप्रयाग के रघुनाथ कीर्ति परिसर में 41 शोधपत्र पेश किए

देवप्रयाग, संवाददाता। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर में न्याय-दर्शन विभाग की ओर से राष्ट्रीय संगोष्ठी में 41 पत्रवाचकों ने राष्ट्रवाद पर शोधपत्र प्रस्तुत किये। वक्ताओं ने सभी को शास्त्रों और संस्कृत साहित्य का अध्ययन को जरूर करना चाहिए। श्री रघुनाथ कीर्ति देवप्रयाग में दो दिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ जवाहरलाल नेहरू विवि संस्कृत और प्राच्य विद्या अध्ययन केन्द्र के अध्यक्ष प्रो. हरिराम मिश्र ने दीप प्रज्जवलित कर किया। उन्होंने कहा कि वेद हमें राष्ट्रीय भावना सिखाते हैं। राष्ट्रवाद भावना के लिये आपसी एकता और प्रेम आवश्यक है। उन्होंने कहा कि भारत के प्राचीन ज्ञान का लोहा पूरा विश्व मानता है, इसलिये विश्व में भारत का डंका बजता है। कहा कि सभी को शास्त्रों और संस्कृत साहित्य का अध्ययन जरूर करना चाहिए। दिल्ली विश्वविद्यालय आर्यभट के हिन्दी प्रो. देवप्रकाश मिश्र ने कहा कि हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु और दिनकर सहित अनेक कवियों ने राष्ट्रीय भावना जाग्रत करने में बड़ी भूमिका निभाई। संस्कृत परिसर के निदेशक प्रो.पीवीबी सुब्रमण्यम ने कहा कि राष्ट्र सेवा करने के अनेक माध्यम हैं, देश के सभी नागरिकों को राष्ट्रसेवा में योगदान जरूर देना चाहिए। न्याय विभाग संयोजक डॉ. सच्चिदानन्द स्नेही ने संगोष्ठी में पढ़े गये शोधपत्रों का विवरण दिया। परमार्थ निकेतन के आचार्य संजीव भट्ट ने शोध पत्र वाचकों को प्रमाण पत्र वितरित किये। मौके पर डॉ. शैलेन्द्र नारायण कोटियाल, डॉ. शैलेन्द्र प्रसाद उनियाल, डॉ. वीरेन्द्र सिंह बर्त्वाल, डॉ. सुरेश शर्मा, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. संजीव भट्ट, डॉ. मनीष शर्मा, डॉ.अंकुर वत्स, डॉ. सुधांशु वर्मा, डॉ. श्रीओम शर्मा, जनार्दन आदि थे।

देवप्रयाग के श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर में शुक्रवार को संगोष्ठी का शुभारंभ करते मुख्य अतिथि।

Dr. Sachchidanand Snehi
Associate Professor
Department of Philosophy
Mobile (W)- 7979882977

Prof. P.V.B. SUBRAHMANYAM
Director
Central Sanskrit University
Shri Raghunath Kirti Campus
Devprayag-249301